'चलो ये साल भी गुजर जायेगा'

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

नंबर जो भी थे आए सबके दिमाग से उतर जाएगा

जो तुमने खुद में है देखा उसको कभी कोई न देख पाएगा

एक उड़ान को तैयार परिंदा उड़ान के बाद संवर जाएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

हैं जो सपने तुम्हारे

उन रास्तों में गिरने का डर आएगा

पर पहिया ये समय का रास्तों पर फिर आएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

लगेगी मंज़िल है नजदीक

धीरे से उस पर चढ़ जाएगा

लेगी बदल जो रास्ता

मंज़िल थोड़ा सा तू घबराएगा

पर रास्तों के गड्ढों से सीखा

जो उसको आज़मा

मंज़िल पा जाएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

नंबर जो भी थे आए

अब तू उनसे नहीं जाना जाएगा

पहचान होगी तेरी नई

और होगा नया

मंज़िल जो अब तक है सीखा

वो सब काम आएगा

कहीं न कहीं ये मंज़िल भी तुझे सताएगी

पर संतुलित रखना खुद को भी

तू सीख जाएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

नई मंज़िल नया इम्तिहान

अब तुझे आज़माएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

चलो ये साल भी गुज़र जाएगा

: पंकज कुमार (सी. एस. ई. चतुर्थ वर्ष)